एक कार्य दिवस में अधिक से अधिक ३० लेखपत्रों के पंजीकरण दिये जायेंगे अपॉइंटमेंट

लखनऊ (संवाददाता): उत्तर प्रदेश में कोरोना संक्रमण (कोविड-१९) के तेजी से बढ़ते मामलों तथा संक्रमण से बचाव व नियंत्रण के दृष्टिगत प्रदेश के स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन विभाग द्वारा प्रदेश के निबंधन कार्यालयों में पुनः पूर्व अपॉइंटमेंट व्यवस्था प्रारम्भ की गई है। जिसके तहत एक कार्य दिवस में अधिक से अधिक ३० लेखपत्रों के पंजीकरण हेतु अपॉइंटमेंट दिए जाएंगे। यह जानकारी देते हुए प्रदेश के स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) रवीन्द्र जायसवाल ने बताया कि वर्तमान परिदृश्य में राज्य की वित्तीय स्थिति एवं मानव जीवन की रक्षा एवं सुरक्षा के दृष्टि से निबंधन कार्यालय द्वारा निर्गत पूर्ववर्ती समस्त दिशा निर्देशों को अवक्रमित करते हुए समस्त जिलाधिकारी व मंडलायुक्त तथा समस्त उप महायक निरीक्षक निबंधन को इस संबंध में दिशा निर्देश निर्गत किए गए हैं। जायसवाल ने बताया कि व्यवहारिक पक्ष को देखते हुए निबंधन शुल्क २०,००० रुपए से अधिक की धनराशि का भुगतान यथासंभव ऑनलाइन ही स्वीकार किया जाएगा। इसके साथ ही वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में स्थानीय स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए समय की उपलब्धता एवं सुरक्षा को ध्यान में रखकर यदि अपॉइंटमेंट के माध्यम से पंजीकृत किये जाने वाले विलेखों से अतिरिक्त समय उपलब्ध रहता है, तो उप निबंधक द्वारा टोकन व्यवस्था के माध्यम से विलेखों का पंजीकरण किया जा सकेगा। इस संबंध में विस्तृत जानकारी देते हुए महानिरीक्षक निबंधन डॉ. रोशन जैकब ने बताया कि पूर्व अपॉइंटमेंट की व्यवस्था में किसी भी दशा में बिना पूर्व अपॉइंटमेंट के पंजीकरण के लिए कार्यालयों में पक्षकारों की उपस्थिति अनुमन्य नहीं होगी। उन्होंने यह भी बताया कि विलेख की तैयारी के पश्चात पक्षकारों को विलेख की जांच संबंधित कार्यालय के निबंधन सहायक द्वारा करानी होगी, जिससे आरक्षित समय में पक्षकारों के विलेख के निबंधन का कार्य सुगमता पूर्वक संपादित किया जा सके। डॉ. जैकब ने बताया कि १ जून, २०२० को इस संबंध में आदेश जारी किए गए थे, जिसके तहत राज्य में राजस्व वृद्धि तथा अधिक से अधिक आम जनों को पंजीकरण की सुविधा मुहैया कराए जाने के दृष्टिगत लागू अनिवार्य अपॉइंटमेंट की व्यवस्था वैकल्पिक करते हुए अपॉइंटमेंट व्यवस्था के साथ-साथ बिना अपॉइंटमेंट की रजिस्ट्री निष्पादित करने के निर्देश दिए गए थे।

कोरोना संक्रमित बहनोई की मौत के बाद मोबाइल व पैसे गायब करने का भाजपा नेता ने लगाया आरोप

लखनऊ (संवाददाता)। लोहिया अस्पताल में कोरोना संक्रमित की मौत के बाद अस्पताल प्रशासन द्वारा मरीज का मोबाइल और नगदी वापस न करने का आरोप लगाते हुए भाजपा नेता व गोसाईंगंज नगर पंचायत अध्यक्ष निखिल मिश्रा ने संस्थान के निदेशक व नोडल अधिकारी को पत्र लिख कड़ी नाराजगी जताई है। चेयरमैन ने कहा कि पैसे व मोबाइल वापस न मिलने पर मामले की शिकायत आला अधिकारियों व पुलिस आयुक्त से की करेंगे। चेयरमैन निखिल मिश्रा ने बताया कि सुशांत गोल्फ सिटी के अहिमामऊ निवासी उनके बहनोई प्रशांत द्विवेदी को कोरोना संक्रमित होने के बाद शहीद पथ स्थित राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान के २०० बेड के कोविड अस्पताल में १४ अप्रैल को भर्ती कराया गया। इलाज के दौरान २६ अप्रैल की सुबह उनकी मौत हो गई। अस्पताल प्रशासन ने चेयरमैन व परिवारीजनों को बुलाकर शव के साथ ही मृतक के पास मौजूद सामान तो सौंपा। उसमें से मृतक प्रशांत का मोबाइल व १७ हजार रुपये गायब थे। निखिल मिश्रा का आरोप है कि अस्पताल प्रशासन से जब मोबाइल व पैसे देने की बात कही गई तो दो दिन बाद आकर ले जाने को कहा गया। आरोप है कि दो दिन बाद भी न तो मृतक का मोबाइल मिला और न ही पैसे। चेयरमैन ने राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान के निदेशक व नोडल अधिकारी को पत्र लिखकर मोबाइल व पैसे वापस दिलाए जाने की मांग की है। चेयरमैन के मुताबिक, कोविड अस्पताल के प्रभारी ने बताया कि मोबाइल व पैसे के लिए अस्पताल में तैनात स्टाफ से पूछताछ की जा रही है। फिलहाल अभी तक कुछ पता नहीं चल सका है। जानकारी न होने पर सीसीटीवी फुटेज से पड़ताल की जाएगी। संस्थान के प्रवक्ता डॉ. श्रीकेश के मुताबिक, मामले की जांच कराई जा रही है। जिसके बाद आगे की कार्यवाई होगी। सीसीटीवी कैमरे चेक कराए जा रहे हैं।

जरूरी प्रोटोकाल अपनाएं, कोरोना को दूर भगाएं

– मास्क का सही इस्तेमाल ही बचाएगा संक्रमण से

सीतापुर (संवाददाता)। कोरोना का संक्रमण एक बार फिर तेजी से फैल रहा है। ऐसे में हमें मास्क लगाने, बेवजह घर से बाहर न निकलने, एक दूसरे से दो गज की शारीरिक दूरी का पालन करने और बार-बार हाथ साबुन और पानी से धोने के प्रति स्वास्थ्य विभाग द्वारा हर किसी को बराबर जागरूक किया जा रहा है। सीएमओ डॉ. मधु गैरोला का कहना है कि कोविड प्रभावित व्यक्ति के खांसने या छींकने से निकलने वाली बूंदें हवा में फैल जाती हैं। इसलिये सभी को मास्क से मुंह और नाक क ढककर रखने की सलाह दी जाती है। मास्क पहनते समय इस बात का हमेशा ध्यान रखें कि चेहरे पर मास्क अच्छे से फिट हो और किनारों पर कोई गैप न हो। वायरस नाक, मुंह और आंखों के माध्यम से व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करता है। इसलिए घर से बाहर निकलने पर मास्क पहनने की हिदायत दी जाती है। मास्क लगाकर हम एक हद तक संक्रमण को रोक सकते हैं लेकिन यह भी जरूरी है मास्क को हमने किस तरह से पहना है और उसका उपयोग करने में हम क्या सावधानी बरत रहे हैं। ऐसा न हो कि मास्क तो पहना हो लेकिन नाक या मुंह कवर न हो रहा हो।

बोकारों से जनपद को पांच टन और मिली प्राणवायु

आजमगढ़ (संवाददाता): जिले में मंगलवार की रात लगभग १२ बजे बोकारो से पांच टन और एलएमओ (लिक्विड मेडिकल ऑक्सीजन) से भरा टैंकर पहुंचा। जिससे ठप्प आक्सीजन की व्यवस्था में लगे अफसरों की जान में जान आ गई। ऑक्सीजन की कमी से मरीजों की कमजोर पड़ने वाली सांसों को संजीवनी मिल गई। एलएमओ एफएमपुर फैक्ट्री पहुंचा तो सिलिंडरों की रिफिलिंग का रात दिन चल रहा है। बुधवार को जिले के सभी सरकारी, निजी अस्पतालों व नर्सिंग होम के अलावा होम क्वारंटाइन कोरोना संक्रमित गंभीर मरीजों के यहां आपूर्ति जारी रही।

लखनऊ में संक्रमितों का आंकड़ा पांच हजार पार होते ही सैंपल का ब्योरा देना बंद

लखनऊ (संवाददाता)। राजधानी लखनऊ में एक दिन में मिलने वाले कोरोना मरीजों का आंकड़ा जैसे ही पांच हजार पार हुआ, वैसे ही सैंपल का ब्योरा सार्वजनिक होना बंद हो गया। इसकी वजह भी साफ नहीं है। टेस्टिंग से जुड़े अधिकारी सैंपल का आंकड़ा २८ हजार के करीब होने की बात कहते हैं, पर इसे सार्वजनिक नहीं किया जा रहा है। इससे लखनऊ में संक्रमण की दर पता नहीं चल पा रही। साथ ही यह अंदाजा नहीं लग पा रहा कि मुख्यमंत्री के ज्यादा से ज्यादा टेस्टिंग के निर्देश का कितना पालन हो रहा है। लखनऊ में यूं तो मार्च से ही संक्रमितों का आंकड़ा बढ़ना शुरू हो गया था, लेकिन अप्रैल से इसमें काफी तेजी आई। रोजाना सैंपल की संख्या और मरीजों का ब्योरा जारी होने से संक्रमण दर निकालना आसान था। आखिरी बार १२ अप्रैल को सैंपल का आंकड़ा जारी किया गया था। उस दिन लखनऊ में २९,४९२ नमूने लिए गए थे। इसके अगले दिन ५३८२ लोग संक्रमित मिले थे। इस हिसाब से लखनऊ में उस दिन संक्रमण दर १८ फीसदी से भी ज्यादा थी। १७ अप्रैल को ही पहली बार मरीजों का आंकड़ा पांच हजार के पार पहुंचा था। इसके बाद से लखनऊ में लिए जाने वाले सैंपल का आंकड़ा जारी नहीं हो रहा है। खास बात यह है कि प्रदेश स्तर पर लिए जाने वाले आंकड़े रोज जारी हो रहे हैं, लेकिन लखनऊ का ब्योरा छिपाया जा रहा है। प्रदेश में रोजाना करीब पौने दो लाख टेस्ट किए जा रहे हैं। इस संबंध में सीएमओ डॉ. संजय भटनागर से संपर्क करने की कोशिश की तो उन्होंने फोन नहीं उठाया। लखनऊ में सीएमओ की ओर से कितने लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया, यह आंकड़ा जारी होना भी बंद हो चुका है।

काला आलू से पौष्टिक होगी किसानों की तकदीर

बलिया(संवाददाता): आप काला आलू से बना व्यंजन खाना चाहते हैं, लेकिन आपको यह बाजार में आसानी से नहीं मिलता। इस बार ठंड के सीजन में यह बलिया में भी मिलना शुरू हो जाएगा। संभव है कि इसे दूसरे जिलों में भी भेजा जा सके। अभी तक उत्तराखंड में ही यह प्रजाति मिलती है, लेकिन अब उत्पादन बलिया में होने लगा है। प्रगतिशील किसानों में शुमार दौलतपुर के संतोष सिंह ने दो बिस्वा खेत में काला आलू की गजब की पैदावार की है। उन्होंने अक्टूबर २०२० में ५० किलोग्राम बीज बोया था, यहां से करीब तीन क्विंटल पैदावार हुई है। प्रयोग के तौर पर जो भी उत्पादन हुआ, उन्होंने उसे बाजार में नहीं बेचा। बल्कि कोल्ड स्टोरेज में रख दिया है। संतोष सिंह ने बताया कि इससे बीज तैयार किया जा रहा है ताकि दूसरे किसानों को अपने साथ जोड़कर इसे विस्तार दिया जा सके। २० किसानों ने उनसे बीज लेकर काला आलू का उत्पादन करने का मन बना लिया है। गांव के लक्ष्मण सिंह, रामबहादुर सिंह, अभय नारायण सिंह, अनिल सिंह व मुड़ी के लक्ष्मण राय समेत कई किसानों ने बीज मांगा है। बकौल संतोष, पिछले दिनों उन्होंने कृषि विभाग द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में भी हिस्सा लिया। बेहतर उत्पादन के लिए ही उन्हें पुरस्कृत भी किया गया। यह बीज उन्होंने उत्तराखंड से मंगाया था। बाजार से १० रुपये महंगा, लेकिन है गुणों से भरपूर अभी किसान सफेद और लाल आलू का उत्पादन करते हैं। यही खेती जिले में हो रही है। काला आलू दोनों प्रजातियों से प्रति किलो करीब १० रुपये महंगा है। लेकिन यह स्वास्थ्य के लिए अधिक लाभदायक है। पहाड़ों में लोग इसका खूब सेवन करते हैं। अब इस प्रजाति को जिले में विस्तार देने की तैयारी है। कर चुके हैं काला धान व काला चना की सफल खेती सालों पहले उन्होंने इंटरनेट से काला धान की जानकारी हुई तो एक एकड़ में उसकी खेती की। अच्छी आमदनी हुई, वह काला गेहूं व काला चना की भी अच्छी खेती पहले से कर रहे हैं। बताया कि काला आलू की पैदावार लाल या सफेद आलू से अच्छी हुई है। इन प्रजातियों की तुलना में इसका बीज महंगा है।

काले आलू के ये फायदे

काला आलू में वसा नहीं होता बल्कि यह रक्त की कमी को पूरा करता है। शरीर में मोटापा कम करता है। ४० फीसद आयरन होता है। विटामिन बी-६ और फ्लोलिक एसिड भी मिलता है। यह हीमोग्लोबिन भी बढ़ाता है। यह गर्भवती महिलाओं के लिए सर्वाधिक फायदेमंद है। काला आलू में गुणवत्ता अधिक होती है। आयरन की मात्रा अधिक होने से रंग काला होता है। बलिया में काला आलू का उत्पादन आराम से हो सकता है। जिले का तापमान इस प्रजाति के लिये एकदम अनुकूल है। ठंड में दिन में १८ से २५ डिग्री जबकि रात में ९ से १४ डिग्री तापमान में कंद बनना शुरू हो जाता है। इतना तापमान बलिया में आराम से मिल जाता है।

सार्थक स्वदेशी टाइम्स
हिन्दी साप्ताहिक

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक टी० त्रिवेदी 'सुशील' द्वारा रावत ऑफसेट प्रेस, 229 फूलबाग लखनऊ से मुद्रित एवं ग्राम-कनेरी, पो०- छतौनी (नगराम), तहसील- मोहनलालगंज, लखनऊ से प्रकाशित।

सम्पादक
सुशील कुमार 'जिद्दू'
मो०- 9450095529
9532580881

उप सम्पादक
सार्थक त्रिवेदी "मोहित"
सह सम्पादक
वीरेन्द्र शंकर मिश्रा (बील)

Email: sstimes29@yahoo.com

समस्त विवादों का निस्तारण लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।